Printing Area UGC Jr.No.43053 UGC Approved Refereed Journal

Printing Area

Special Issue April-2018

International Multilingual Research Journal

ISSN 2394-5303

Father of Indian Constitution : Dr. Babasaheb Ambedkar

Prof. Dinesh Jaronde

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

39) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे स्त्री -उद्धारक विचार व कार्य
प्रा. घाडगे शंकर धारबा, राणीसावरगाव || 133

40) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व जलधोरण
Dr. Sonkamble A.C., Shankar Nagar || 137

41) अस्पृशांचे कैवारी:— भारतरत्न डॉ. भीमराव आंबेडकर
प्रा.सचीन कोठेकर, अकोट. || 139

42) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व लोकप्रेरणा
प्रा. डॉ. रासवे विश्वनाथ भोजाजी, राणीसावरगाव || 141

43) डॉ. आंबेडकर आणि आदर्श लोकशाही विषयक मार्गदर्शक तत्वे
प्रा. विश्रांती एम. धडाडे, चंद्रपूर. || 143

44) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शिक्षणविषयक विचार व कार्य
प्रा. अंभोरे अशोक गंगाराम, सेनगांव || 146

45) डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांचे जातीव्यवस्था निमुर्लनाबद्दल विचार
प्रा.संजय उत्तमराव उगेमुगे, पोंभूर्णा, || 150

46) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कृषी विषयक विचार
प्रा. डॉ. गणेश गोविंदराव माने, राणीसावरगाव || 154

47) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व बौद्धधम्म
डॉ. तिलक दु. भांडारकर, गोंदिया || 155

48) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची धम्मदिक्षा आणि स्त्री मुक्ती
प्रा. डॉ. के.एस. ठाकरे, चंद्रपूर. || 160

49) डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर और मानवतावाद
प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव, सोनपेठ || 164

50) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार.
प्रा. डॉ. सुरेश एम. डोहणे, भामरागड, || 167

51) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी भारतीय राज्यकर्त्यांना दिलेले इशारे
डॉ. विद्याधर बन्सोड, चंद्रपूर. || 170

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Dist. Parbhani

स्त्रियांना पुरूषांबरोबरीचे राजकीय, सामाजिक, आर्थिक असे सर्व प्रकारचे अधिकार मिळवून दिले. हजारो वर्ष समाजात गुलामीचे जीवन जगणाऱ्या स्त्रियांना समानता, प्रतिष्ण, मानसन्मान मिळवून दिला. त्यांनी अनिष्ट रूढीपंरपरांच्या, व्यक्ति स्वातंत्र्यांचे हनन करणाऱ्या धार्मिक नियमांच्या बंधनातून धर्मांतर करून स्त्रियांना मुक्त करण्याचे मौलिक कार्य केले. स्त्रिला स्वत:ची ओळख, स्वत:ची अस्मिता प्राप्त झाली. स्त्रियांमध्ये मानसिक बदल झाला. स्त्रियां अधिक संगठित झाल्या. भारतात बौध्द धम्माचे पुनरूज्जीवन झाले. स्त्रियांनी हिंदू देव देवतांचा त्याग केल्याने धार्मिक परिवर्तन घडून आले. स्त्रिया बौध्द धम्मावर आधारित नविन सणवार करून लागल्या. स्त्रियांमध्ये सांस्कृतिक कार्याची प्रेरणा निर्माण झालीस. स्त्रियांचा उच्च शिक्षण घेण्याकडे अधिक कल निर्माण झाला. आर्थिक जिवन सुखमय करण्याची प्रेरणा मिळाली, धार्मिक संस्कारामध्ये बदल झाला. स्त्रियांमध्ये स्वंय प्रकाशित होण्याचे वारे वाहू लागले.

संदर्भ ग्रंथसूची:—

१. गुप्त रामबाबू, भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, कानपूर, १९८०.
२. डॉ. सुर्या अनिल, प्राचीन अर्वाचीन भारतीय स्त्री आणि हिंदूकोडबील, पुणे, २०१०.
३. खैरमोडे चां.भं. डॉ. भिमराव रामजी आंबेडकर, खंड ३
४. सबाणे अरूणा (स.), फुले—आंबेडकर आणि स्त्री, नागपूर, २००६
५. मून मिनाक्षी (स.), फुले—आंबेउकरी स्त्री चळवळ, नागपूर, २०११
६. पंडित नलिनी, डॉ. आंबेडकर, दादर, २००५
७. गवई सुभाष, बहुआयामी डॉ. आंबेडकर, नागपूर, २००४
८. आपटे ज.श./रोडे पुष्पा, भारतातील महिला विकासाची वाटचाल, डायमंड पब्लीकेशन पुणे, २००८
९. डोंगरे कृष्णकांत, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या चळवळीत नागपूर शहराचे योगदान. नागपूर, २०१२

49

डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर और मानवतावाद

प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिन्दी विभागाध्यक्ष
कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ, ता.सोनपेठ

****

वर्तमान भारतीय समाज एक प्रगतिशील समाज है, जिसके नवनिर्माण में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर का योगदान अमूल्य है जिसे हम कभी नही भूल सकते । जिनके आदर्श एवं सिद्धांन्त सभी कालों मे प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय रहे है । डॉ.अम्बेडकर ने भारतीय समाज में सदियों से पददलित, मूक पीडित शोषित, तिरस्कृत एव अपमानित समाज के शुद्र कहलाने वाले वर्ग के ज्ञानार्जन, अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए संघर्ष किया तथा विकृतियों से भरे भारतीय समाज को झकझोर कर जगाया, उसे एक सुत्र, एक राष्ट्रीयता में बांधकर राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्र के सशक्तिकरण में अप्रतिम योगदान दिया । इसलिए आज डॉ.अम्बेडकर को भारतीय समाज में राष्ट्र निर्माता के सम्मान का उच्चशिखर प्राप्त हुआ है । इस प्रकार डॉ.अम्बेडकर के विचारधारा के विस्तार तथा उसको गहराई और प्रभावशिलता ने ही भारतीय समाज को नई दिशा दी है। राष्ट्र निर्माण में उनका योगदान अविस्मरणीय है ।

विश्व क महान जननायक डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर का जीवन संघर्ष क्षेत्र मानव कल्याण एवं विश्व शांन्ति का प्रतिक मानव. मानव एक समान रहे इसका मूल आधार समता स्वतंत्रता और बंधुता माना हो ऐसे लोंगो के जन्मोत्सव के साथ -साथ उनके परिनिर्वाण दिवस भी उनकी स्मृती के रूप में मनाया जाता है. डॉ.अम्बेडकर का १४ अप्रैल जन्म दिवस, १४ अक्टुबर धम्म दीक्षा दिवस एवं ६ दिसंम्बर महपरिनिर्वाण दिवस और सामाजिक क्रांती / मानवतावादी दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

यहां यह प्रश्न निर्माण होता है कि यह दिवस सामाजिक क्रांति अथवा मानवतावाद दिवस के रूप में क्यों स्वीकार किया जाता है ? इस का सरल उत्तर यही है कि, इसी दिन ६ दिसम्बर १९५६ को डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर ने ``भगवान बुध्द और उनका धम्म ग्रंथ``

के लेखन कार्य को पूरा किया था जो विश्व में मानवतावाद का प्रतीक है । जैसे तथागत गौतम बुध्द का बुध्दत्व उन्ही तक सीमित नहीं था, अपितु वास्तव में उनका बुध्दत्व महान मानवतावादी क्रांति का बुध्दत्व था, जिसमें विश्व के इतिहास में प्रथम बार समता स्वतंत्रता और बंन्धुता का क्या महत्व होता है, लोगों को बताया, जिसके बिना मानव जीवन, मानव जीवन न होकर एक पशुवत जीवन है, क्योंकि समता, स्वतंत्रता और बन्धुता से रहित जीवन मानव को निर्वाण की अवस्था में नहीं ले जा सकता, समता के बिना स्वतंत्रता के भाव पैदा नहीं हों सकते, ठीक इसी प्रकार स्वतंत्रता के बिना बन्धुता की भावनाएं पैदा नही हो सकतीं । मनुष्य के मन में समता के अभाव में भय पैदा होता हैं, स्वतंत्रता के अभाव में भ्रम पैदा होता है और बंन्धुता के अभाव में मनुष्य के मन में भ्रान्ति पैदा होती है । जहां देखो वही समता, स्वतंत्रता और बन्धुता के अभाव में मनुष्य को सामाजिक धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक शोषण के बंधनों में जकड कर रखा हुआ है ।

भारतीय समाज को उसकी व्यापकता विविधता और जटिलता के कारण उस समय तक स्पष्टतः नही समझा जा सकता जब तक कि उसके आधारों पर गहराई से विचार नहीं किया जाये । आधारों को समझने के लिए आवश्यक है कि हम भारतीय समाज के सम्बन्ध में ऐतिहासिक दृष्टि से भी विचार करें जैसा कि हम समझ ते है उतना यह समाज सरल नहीं है । ``यह विश्व के प्राचीनतम समाजों में से एक प्रमुख समाज है । जिसका इतिहास लगभग ५००० वर्ष पुराना है ।``१ डॉ.बाबासाहब का जन्म ऐसे समय हुआ, जब एक और भारत की जनता अंग्रजी शासन के विरूध्द स्वतंत्रता की लडाई आरम्भ कर चुकी थी ।वहीं दूसरी और हिंन्दु धर्म की रूढिवादिता चरम पर थी । जातिभेद तथा असमान सामालिक व्यवहार से देश की अछूत जातियाँ भेदभाव तथा उपेक्षा का स्विकार हो रही थी उनकी स्थितियाँ चिन्तनीय एवं सोचनीय थी । ऐंसी विषम परिस्थितीयों में डॉ.अम्बेडकर का जन्म हुआ निसंदेह उनका जीवन अनेक सामाजिक असमानताओं तथा भेदभाव की अमानवीय स्थितियों से जुझते हुवे, सर्वोच्च उपलब्धी को छू लेने की महान गाथा है ।

भारत की जाति-व्यवस्था के घोर विरोधी एवं कटु आलोचक बाबासाहब बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे उन्हें स्वतंत्र्य भारत के संविधान के निर्माता और दलित चेतना के प्रतिक पुरूष के रूप में जाना जाता है । डॉ.अम्बेडकर ने अपने गहन अध्ययन, संघर्षो एवं अनुभवों के आधार पर एक ऐसे मानवतावादी समाज की स्थापना के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिसमें ``मनुष्य-मनुष्य के बीच जन्म, जाति, आर्थिक स्थिती, लिंग आदि के आधार पर कोई भेदभाव ना हो और सबके के लिए अवसरों की समानता हों । वे समान सुविधाओं, समान अवसरों समान प्राथमिकताओं पर बल देते थे।वे प्रत्येक मानव को कानून की दृष्टि से समान समझते थे । और जहाँ तक मानव की कुछ सामान्य विशेषताओं का प्रश्न है, वहॉ पर समानता का सिध्दांत स्वीकार करते थें ।``३

डॉ.अम्बेडकर ने बताया कि ``सत्यता की सही कसौटी यही है कि तुम अपने से स्वयं प्रश्न करो कि क्या अमुक बात करना जनहितकार है यानी बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की कसौटी पर खरी उतरती है ? क्या अमूक बात निन्दनीय है ? क्या अमूक बात विज्ञ जनों द्वारा निषिध्द है ? क्या अमुक बात करने से कष्ट और दुःख होता है ? यह भी देखना चाहिए कि मत विश्लेषण के आधार पर तृष्णा, घृणा, मूढ़ता और हिंसा की भावन की वृध्दि में सहायक तो नही है ? लोगों के हित या अनहित में है ? अज्ञान ही दुःख और दासता की जड़ है ।``

देश की सर्वांगीण विकास और राष्ट्रीय पुनरूत्थान के लिए सबसे अधिक महत्वपुर्ण विषय हिंन्दु समाज का सुधार एवं आत्म उद्धार है । डॉ.अम्बेडकर के मतानुसार भारत के समाज सुधारकों का सामाजिक दृष्टिकोण समाजा सुधार के विषय में बहुत ही संकुचित था, सिमित था ।जिसमें केवळ सतिप्रथा, निषेध, विधवा विवाह, बाल विवाह निषेध आदि तक ही समित था । यहाँ पर ध्यान देने योक्य बात यह है कि इन सभी समाज सुधार कार्यक्रमों एवं आन्दोलनों का कार्यक्षेत्र और प्रभाव हिंन्दु समाज के उच्च वर्ग की सामाजिक समस्याओं से था । दलितों एवं समाज के उपेक्षित कमजोर वर्ग इस पुर्नजागरण, पुनः स्थापना एवं पुनःउत्थान की परिधी से बाहर ही थे।४सामाजिक नवजागरण अग्रदुत, आधुनिक भारत के निर्माता, सामाजिक क्रांति के प्रेरक पुरूष तथा अपना संम्पूर्ण जीवन सदियों से शोषित दलित मानवता के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक उत्थान के लिए सर्मपित करनेवाले डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर ने पीडित मानवता का उध्दार के लिए एक नवयान की स्थापना की । डॉ.अम्बेडकर के जीवन मूल्यों में सदैव मानवतावाद रहा है । उन्होंने अर्थ, धर्म और राजनीती में समन्वय स्थापित किया ``डॉ.अम्बेडकर ने पंचशिल सिध्दांतों को स्विकार कर समाज मे उन्हें प्रवर्तित किया । बिना किसी वर्ग - भेद और जातिभेद के पंचशील सिध्दान्तों के पालन की सार्वभौमिकता ज्ञापित कीया है। यहा डॉ.अम्बेडकर के मानवतावादी चरित्र का उदात्त स्वरूप था ``५

डॉ.अम्बेडकर ने अपने अछूतोध्दार आन्दोलन का शुभारंम्भ २० जुलाई १९२४ के दिन बाम्बे में ``बहिष्कृत हितकारिणी सभा` की स्थापना से किया सभा का एकमात्र उद्देश्य अछूतोंध्दार था ।``६

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

प्रभावी ढंग उन्होंने स्कूलों तथा छात्रावासों की स्थापना की । डॉ.अम्बेडकर ने `बहिष्कृत भारत` एवं `मुकनायक` पत्रिकाओं का प्रकाशन कर दलितों में नवचेतना एवं जागृतिं उत्पन्न की तथा उनकी सामाजिक समस्याओं को प्रचलित समाज व्यवस्था के विरूध्द प्रमुखता से उठाया । सामाजिक सुधार हेतु समाज व्यवस्था के विरूध्द उनके ऐतिहासिक आन्दोलन १९२७ में महाड के सार्वजनिक तालाब से दलितों को सामुहिक रूप से प्रवेश दिलवाकर पानी भरवाना, मार्च १९३० में नासिक के कालाराम मंन्दिर प्रवेश के लिए आंदोलन, साईमन कमिशन समक्ष दलितों के हितों का प्रस्तुतिकरण, १९३६ में इंडिपेन्डेन्ट लेसर पार्टी की स्थापना, १९४२ में ऑल इंडिया शेल्डयूल्ड कास्ट फेडरेशन की स्थापना, १९४५ में पिपुल्स एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना आदि जिसके माध्यम से उन्होंने दलितों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ समाज में फैले अंधविश्वासों, रूढियों, परम्पराओं एवं कर्मकाण्डो पर भी कडा प्रहार किया । ``डॉ.अम्बेडकर ने न केवल परम्परागत समाज में आमुल परिवर्तन की बात की अपितु उसके लिए प्रयत्न भी किया वे आरामकुसी पर बैठकर सिध्दान्त की रचना करनेवाले विद्वान नहीं थे, वरन् सैध्दांन्तिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर संघर्ष करनेवाले महान योध्दा भी थे।``७ विश्व के सबसे बडे प्रजातन्त्र को एक नई दिशा देने और उसे मजबुती लाने में डॉ.अम्बेडकर का योगदान महत्वपूर्ण है विकृतियों से भरे भारतीय समाज को झकझौर कर जगाया उसे एक सुत्र, एक राष्ट्रीयता में बांधकर राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्र को सशक्तीकरण में अप्रतिम योगदान दिया । वे ऐसे समाज की रचना करना चाहते थे जिसमें व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति, शिक्षा और आत्मविकास की तथा आजीविका के चुनाव की स्वतत्न्त्रता हो । उनका मानना था कि समाज में इतनी गतिशिलता होना चाहिए कि कोई भी वांछित परिवर्तन एक छोर से दूसरे छोर तक संचलित हो सके, साथ ही समाज के बहुनिध हितों में सबका भाग हो । उनकी रक्षा के प्रति सब सजग हो, साथ ही सबको सामाजिक जीवन के अबाध संम्पर्क के साधन व अवसर उपलब्ध हो।``८ डॉ.बाबासाहब जाति विहीत वर्णविहित समाज व्यवस्था के पोषक थे । देश की शासन व्यवस्था कल्याणकारी हो, जिसमें सभी को फलने-फुलने का समान अवसर मिले इस बात के पक्षधर थे । वे चाहते थे कि देश में पूंजी का केंद्रीयकरण नहीं हो । अवसर की समानता सभी को समान रूप से प्राप्त हो,

डॉ.बाबासाहब सामाजिक व धार्मिक आन्दोलनों की जिम्मेवारी को निभाते हुए संविधान निर्माण जैसा महत्वपूर्ण कार्य किया । ``दुनिया का सबसे बडा संविधान, जिसमे ३९५ अनुच्छेद एवं ८ अनुसूचियाँ है, इसके निर्माण में भले ही दो साल ११ महिने एवं १७ दिन लगे हो, लेकिन अम्बेडकर की अध्यक्षता वाली समिती ने केवळ १४१ दिन में कार्य कर दिया था । बाकी दो संविधान सभाओं ने चर्चा आदि में १६६ दिन लगाए । देशभर से विभिन्न धर्मो विचारों संस्थाओ से प्राप्त सुझाओं के बाद २४७३ संशोधन कर केवळ १४७ दिन में दुनिया का श्रेष्ठ संविधान दिया ``९

समापन -

डॉ.अम्बेडकर भारतीय समाज के ही नही अपितु समस्त मानवता के शुभचिंतक थे । वे मानव अधिकारों के लिए अंत तक संघर्ष करते रहे थे । वह सामाजिक कार्यकर्ता और निर्देशक भी थे । उन्होंने पर गणित जाती के उत्थान के लिए कमर नही कसते तो उनके लिए जो हो सका और जो हो रहा है, वह कदापि नही हो पाता । वह तेजी से उस क्षेत्र में कार्य के पक्षपाती थे । उनका व्यक्तित्व मानवता के प्रति श्रध्दावान था । दस देश को बाबासाहब अम्बेडकर का एहसान मानना चाहिए कि उनके दिए संविधान की बदौलत देश में लोकतंत्र कायम है । देश एकता में बंधा हुआ है । बहुत जटिल भारतीय समाज को एक सूत्र में बांधे रखनेवाला संविधान डॉ.बाबासाहब अंम्बेडकर ने दिया है । बाबासाहेब का पूरा जीवन लोगों एवं उनके जीवन से जुडे पहलुओं पर चिंतन - मनन करने, उन्हें संघर्ष के लिए तैयार करने एवं संगठित करने में ही व्यतीत हुआ है हमें संकल्प लेना है कि, बाबासाहब के विचारों को आत्मसात कर सभी को स्वाभिमान और गरिमामय जीवन जीने का रास्ता बनाना है ।

संदर्भ :-

१) समाजशास्त्र - प्रो एम.एल गुप्ता एवं डॉ.डी.डी.शर्मा पृ. १४६
२) हाशिये की आवाज - मासिक पत्रिका - दिसंम्बर २०११ पृ. ०३
३) पूर्वदेवा - सामाजिक विज्ञान शोधपत्रिका-अक्टूबर २०१५ - मार्च २०१६ पृ.०३
४) सामाजिक परिवर्तन में डॉ बाबासाहब अम्बेडकर का योगदान - मासिक अंबेडकर वाणी, इन्दौर २०१३ पृ. २९
५) वर्तमान परिस्थितीत डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांच्या विचारांची आवश्यकता - डॉ एम.आर.इंगळे पृ.२३४
६) डॉ बी.आर.अम्बेडकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ.डी.आर.जाटव पृ.४७
७) डॉ.अम्बेडकर : समाज वैज्ञानिक - रामगोपाल सिंह - पृ. २३
८) डॉ अम्बेडकर का चिन्तन एवं पुनर्जागरण की आवश्यकता - डॉ. ज्योती उपाध्याय - पृ. ४४
९) हाशिये की आवाज - मासिक पत्रिका अप्रैल २०१३ पृ. १२-१३

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani